ऑप्रेशन सफेद चांद

(स्टेज की सैटिंग इस प्रकार है— बड़ा बॉस टेलीफोन लेकर एक ऊंचे चबूतरे पर कुर्सी पर बैठा है। उसकी आंखों पर काला चश्मा लगा है। चबूतरे के नीचे मंच पर एक दूसरा टेलीफोन रखा है। एक औरत कुर्सी पर सीधी बैठा रखी है। जांच अफ़सर और असिस्टेंट भारी कदमों से इधर-उधर टहल रहे हैं। टेलीफोन की घंटी बजती है। बड़ा बॉस जांच अफ़सर से बात कर रहा है।)

बड़ा बॉस : *(टेलीफोन पर)* मिस्टर शुक्ला, एक बात समझ लो, हमारा बड़ा निशाना श्रीमती कुसुम से... मतलब कि... एक इकबालिया बयान लेना है कि उसकी राजा ए. सिंह के साथ आशनाई थी और उसके पति के क़त्ल का कारण भी यही है।

छोटा बॉस : *(टेलीफोन पर ही)* जी जनाब, मुझे इस निशाने का पता है।

बड़ा बॉस : और श्रीमती कुसुम को किसी तरह यह यक़ीन दिलाओ कि हम उसका कोई नुकसान नहीं करना चाहते। हम सिर्फ उस राजा ए. सिंह को सबक सिखाना चाहते हैं। हमारा पाला हुआ हमें ही आंखें दिखाता है। बयानबाजी करता है कि अगर वो हमारी इस इलाके में मदद न करता तो हमें ज़ीरो हो जाना था। हम उसे बताना चाहते हैं कि ज़ीरो हम नहीं, ज़ीरो वो है। हम उसकी पॉलिटिकल मौत देखना चाहते हैं और इसके लिए इस औरत का बयान ज़रूरी है।

छोटा बॉस : ऐसा ही होगा जनाब।

(दोनों टेलीफोन रख देते हैं। छोटा बॉस और असिस्टेंट अब औरत के इर्द-गिर्द बड़े भेदभरे लहज़े में घूमते हैं।)

छोटा बॉस : तो ये राजा ए. सिंह तेरे पति का दोस्त था?

औरत : नहीं, वो हमारे घर का दोस्त था।

छोटा बॉस : क्या वो अक्सर इस घर में आता था?

औरत : हां, वो अक्सर यहां आता था।

छोटा बॉस : क्या वो उस वक़्त घर आता था जब तेरे पति मतलब कि मिस्टर सोहराब घर पर नहीं होते थे?

औरत : बहुत बार इस तरह हो जाता था कि राजा ए. सिंह यहां आते थे और मेरे पति घर में नहीं होते थे या थोड़ी देर बाद आते थे।

छोटा बॉस : हां, और जब वे आते तो राजा ए. सिंह चले जाते थे।

औरत : मतलब?

असिस्टेंट : मतलब यह कि तू स्वीकार करती है कि वो तेरे पति की गैर हाजिरी में तुमसे मिलने आता था।

छोटा बॉस : और अगला मतलब यह कि वो आता ही तुमसे मिलने था और इस बात का ख़्याल रखता था कि तेरा पति उस वक़्त घर में न हो। बात बिल्कुल साफ है।

औरत : तुम्हें शर्म आनी चाहिए, एक औरत से इस तरह बात करते हुए।

असिस्टेंट : मैडम, हम जांच करने वाले हैं और हमारी जांच का मुद्दा है कि हम वो कारण ढूंढें जिस वजह से तेरे पति का क़त्ल हुआ।

छोटा बॉस : इसलिए हमारे लिए बहुत-से सवाल पूछने ज़रूरी हैं।

असिस्टेंट : और ज़रूरी नहीं कि वे सवाल सभ्यता के दायरे में हों।

छोटा बॉस : हां, तो वो अकेली जवान औरत से उसके पति की ग़ैर हाजिरी में मिलने आता था, इसका क्या मतलब लेना चाहिए?

असिस्टेंट : मतलब कुछ भी निकाला जा सकता है।

छोटा बॉस : हम वही मतलब निकालना चाहते हैं, जो होता है। *(बदलकर)* मतलब कि जिसका क़त्ल से संबंध है।

असिस्टेंट : एक आदमी का क़त्ल हो गया और उसकी पत्नी का बयान है कि एक रसूखदार आदमी जो सरकार की शक्तिशाली कुर्सी पर बैठा था, उसे उसके पति की ग़ैरहाजिरी में मिलने आता था।

छोटा बॉस : हम इसका मतलब लेते हैं कि उस भले आदमी का क़त्ल उसकी पत्नी की वजह से हुआ और वो जो रसूखदार आदमी क़त्ल होने वाले आदमी की पत्नी से पति की ग़ैर मौजूदगी में मिलता था, वो क़त्ल का ज़िम्मेदार है।

असिस्टेंट : अगर ज़िम्मेदार नहीं तो साज़िश में शामिल ज़रूर है, जिस कारण उस भले आदमी का क़त्ल हुआ।

औरत : *(रुआंसी होकर)* तुम बड़े ज़ालिम किस्म के लोग हो, तुम्हें एक औरत पर बिल्कुल भी तरस नहीं आता। तुम उसे ज़लील करना चाहते हो?

छोटा बॉस : मैडम, हम जांच ब्यूरो के आदमी हैं। हम एक औरत को ज़लील नहीं कर रहे, बल्कि उसके मुंह से सच उगलवाना चाहते हैं।

असिस्टेंट : और मैडम, हमने सच उगलवा ही लेना है।

औरत : सच यह है कि मुझे इस क़त्ल के बारे में कुछ भी नहीं पता।

छोटा बॉस : यह सच ज़रूर है पर पूरा सच नहीं है।

(टेलीफोन की घंटी बजती है, असिस्टेंट उठाता है।)

असिस्टेंट : बॉस, बड़े बॉस का है। हॉट लाइन से बोल रहे हैं।

बड़ा बॉस : हां, मैं हॉट लाइन से बोल रहा हूं। केस की क्या प्रोग्रेस है?

छोटा बॉस : वो औरत कुछ-कुछ बोल रही है, पर पूरा नहीं बोल रही।

बड़ा बॉस : वो औरत पूरा बोले या अधूरा बोले, मेरी दिलचस्पी इस बात में है कि वो हरामज़ादा फंसे। मेरे से अलग होकर दूसरी सियासी पार्टी बनाता है। वो लोगों में नंगा होना चाहिए कि वो एक सियासतदान नहीं, बल्कि औरतबाज है, जो अपनी पोज़ीशन का लाभ उठाकर दूसरों के घरों में सेंध लगाता है।

छोटा बॉस : ऐसा ही होगा।

बड़ा बॉस : क्या क़त्ल का कोई सुराग मिला? अगर कोई मिले भी तो वो जानकारी पूरी तरह दबा कर रखी जाए, असली क़ातिल का सुराग पता लगाना ज़रूरी नहीं है, जितना उस राजा ए. सिंह को फंसाना ज़रूरी है। अखबारों में जानबूझकर बयान लगवाओ।

छोटा बॉस : पर जनाब, इसका उलटा असर भी हो सकता है। कुछ अखबार यह भी लिख सकते हैं कि हम सियासी बदला लेने के लिए एक औरत को ज़लील कर रहे हैं। कुछ औरतों की संस्थाओं ने यह बात उठा भी ली है।

बड़ा बॉस : उसका नाम नोट करो। देखो कौन-सा अखबार है? उस अखबार के एडिटर से मिलो और उसे उसी तरीके से समझा दो जो तरीका तुम्हारा समझाने का है। अगर उसे अखबार चलाना है तो उसमें वही रिपोर्ट छपेगी जो हम चाहेंगे। क्या वो रिपोर्टर बूढ़ा है, या नौजवान है?

छोटा बॉस : एक सेकिंड होल्ड करना जनाब। *(असिस्टेंट से)* देख, बाहर

खड़ा रिपोर्टर बूढ़ा है या नौजवान ?

असिस्टेंट : *(खिड़की में से देखकर)* जनाब नौजवान है...

छोटा बॉस : *(फोन पर)* जनाब नौजवान है।

बड़ा बॉस : फिर तो बात और भी आसान है। तुम अंधेरा होने तक उस औरत से पूछताछ करते रहो। वो साला रिपोर्टर बाहर इंतज़ार करता रहेगा। अंधेरा होने पर तुम बाहर आ जाना, वो अंदर जाएगा। थोड़ी देर बाद तुम भी अंदर जाओ और उनकी बातचीत करते हुए फोटो खींचो।

छोटा बॉस : जनाब, कैमरा तो इस वक़्त हमारे पास नहीं है। मंगवा लेते हैं।

बड़ा बॉस : मंगवाने की क्या ज़रूरत है ? उस रिपोर्टर का कैमरा छीन लो और धमकी दो कि साला अकेली औरत से अंधेरे में आशनाई करता है। अपने दिमाग का इस्तेमाल करो और इस ऑप्रेशन को कोई नाम दे दो।

छोटा बॉस : नहीं, यह 'थंडर' नहीं, इसमें कोई ग़रज नहीं है। इसका नाम 'ऑप्रेशन व्हाइट मून' माने चांद की सफेद चांदनी, रोमांस और बेवफाई की कहानी। 'ऑप्रेशन सफेद चांद' हमारी जांच के इतिहास में बड़ी उपलब्धि होगी जिसके जरिए एक सियासी दुश्मन को आसमान से ज़मीन पर गिराया जाता है और मिट्टी में मिला दिया जाता है।

(फोन रखता है और ज़ोर-ज़ोर से हंसता है, उसके हंसने के दरम्यान लाइट फेडआउट होती है, जब फिर लाइट जलती है, औरत उसी मुद्रा में बैठी हुई है और रिपोर्टर उससे बातें कर रहा है।)

रिपोर्टर : मैडम, अगर आप इस तरह हौसला हार बैठीं तो वे अपने मिशन में कामयाब हो जाएंगे।

औरत : क्या है उनका मिशन ? मुझे उनके मिशन से क्या मतलब ?

रिपोर्टर : उनका मिशन है राजा ए. सिंह को बदनाम करके राजनीति के क्षेत्र से बाहर करना। मुझे राजा ए. सिंह से कोई खास हमदर्दी नहीं है क्योंकि कुछ वक़्त पहले तक ये भी उनके साथियों में शुमार था। जो कोई भी हेराफेरी करते थे, इकट्ठे करते थे, इनका खाना-पीना सांझा था, सोचना सांझा था। एक बड़ा बॉस था, दूसरा छोटा बॉस था। इलाके के सारे गुण्डे इनकी मुट्ठी में थे, जो बॉस के इशारे पर

किसी भी साधारण नागरिक का जीना हराम कर सकते हैं। उससे हफ्तावसूली कर सकते हैं, यहां तक कि क़त्ल भी कर सकते हैं।

औरत : तो आपका मतलब है कि मेरा पति भी... ?

रिपोर्टर : मैं यकीन के साथ तो कुछ नहीं कह सकता पर यह साफ है कि तुम्हारा पति दो बॉसों की लड़ाई में बलि चढ़ा दिया गया।

औरत : पर मेरा या मेरे पति का इन बॉसों की लड़ाई से क्या लेना-देना ? वे एक साधारण अफ़सर थे और उन्हें यह अफ़सरी उनकी खेल प्रतिभा की बदौलत मिली थी। वे नैशनल चैंपियन थे।

रिपोर्टर : पर यह तो सच है कि राजा ए. सिंह का तुम्हारे घर आना-जाना था।

औरत : वह मेरे पति के खेल का प्रशंसक था।

रिपोर्टर : पर अखबारों में छपा है कि वो आपका भी प्रशंसक था।

औरत : तुमने भी अब जांच करने वालों की तरह डंक मारने शुरू कर दिए और तुम कह रहे हो कि तुम मेरे हमदर्द हो।

रिपोर्टर : नहीं मैडम, मुझे इस तरह गलत मत समझो।

औरत : हां, वो मेरा प्रशंसक था, बहुत दफा उसने यहीं खाना खाया और मेरे खाना बनाने की तारीफ भी की थी।

रिपोर्टर : वैसे आप मानोगे कि तारीफ यूं ही नहीं की जाती।

औरत : बहुत बार वह फोन पर फरमाइश कर देता कि वो रात को आएगा और खाना भी खाएगा।

रिपोर्टर : खाने से पहले 'ड्रिंक' के दौर भी चलते होंगे ?

औरत : हां चलते थे। बहुत बार वह कोई बढ़िया किस्म की शराब की बोतल भी ले आता था।

रिपोर्टर : और आपको यह सबकुछ अच्छा लगता था ?

औरत : कभी भी नहीं। और खास करके तब, जब उसने शराबी-सा होकर मेरे सांवले रंग की तारीफ की तो मुझे बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा। में नहीं चाहती थी कि वो यहां आए क्योंकि उसकी हरकतें किसी वक़्त भी मेरे पति के मन में शक पैदा कर सकती थीं।

रिपोर्टर : तो फिर आपने उसे मना क्यों नहीं किया ?

औरत : मना कैसे करते ? वो एक बड़ा आदमी था, कुर्सी पर बैठा था। हमारा कोई भी नुकसान कर सकता था।

रिपोर्टर : यही तो देश की त्रासदी है कि कुर्सियों पर बैठने वाले वे हैं जिन्हें कभी कुर्सी मिलनी ही नहीं चाहिए। नुकसान तो आपका हो ही गया, बहुत बड़ा नुकसान। अब इस बारे में आप क्या सोचती हैं?

औरत : मैंने क्या सोचना है? पहले तो कुछ दिन मैं यही सोचती रही कि अब मेरे जीने का क्या फायदा है? फिर मुझे अपनी बच्ची का ख़्याल आ गया। मेरे बिना उसकी सार-संभाल कौन करेगा? वह रो रही थी। बहुत ज़ोर से रो रही थी। इधर-उधर झांक रही थी कि उसे पिता की एक झलक मिल जाए। मैं उसके आगे खिलौने लाकर रखती, जो उसके पिता बड़े शौक से लाए थे। उसके पिता जब भी विदेश जाते, उस देश के खिलौने जरूर लाते। पर बच्ची को अब पिता की जरूरत थी, न कि खिलौनों की। वो खिलौनों की तरफ देखती भी नहीं थी। मैं परेशान होती, मुझे कुछ न सूझता, मैं कुछ भी न सोच पाती, पर अब मैं कुछ सोच सकती हूं।

रिपोर्टर : क्या सोचती हो?

औरत : यही कि मेरे पति की जान किसी बड़े सियासी खेल में गई है, मेरा पति उस खेल का चैंपियन था जो गेंद की जगह शटल से खेली जाती है और बड़े अधिकारियों की सियासत की जंग में मेरा पति चिड़िया (शटल) की तरह मार दिया गया। इस पर भी उनकी तसल्ली नहीं हुई, वो मुझे और मेरी बेटी को भी चिड़िया ही समझते हैं। *(वह फूट पड़ती है)* बस मैं इससे ज़्यादा और कुछ नहीं कर सकती। पर मैं उनका मुकाबला करूंगी। *(घंटी बजती है। एक बार, दो बार, तीन बार, सहम कर।)* वे आ गए हैं, फिर आ गए हैं। वे जब आते हैं, इसी तरह घंटी बजाते हैं। तुम इस पिछले दरवाजे से बाहर चले जाओ।

रिपोर्टर : नहीं, बाहर क्यों जाऊं? मैं उनके लिए दरवाज़ा खोलता हूं। *(वह जाकर दरवाज़ा खोलता है, जांच अधिकारी और उसका असिस्टेंट आते हैं।)*

छोटा बॉस : *(रिपोर्टर को ऊपर से नीचे तक देखते हुए)* आप भाई साहब कौन हो?

असिस्टेंट : और यहां किस मकसद से तशरीफ़ लाए हो?

रिपोर्टर : आपका पूछने का मतलब?

असिस्टेंट : *(एक कार्ड दिखाते हुए)* अब आप मतलब समझ गए होंगे?

रिपोर्टर : *(अपना प्रेस कार्ड दिखाते हुए)* उम्मीद है आप भी समझ गए होंगे।

छोटा बॉस : तो आप प्रेस रिपोर्टर हैं, आप यहां क्या करने आए हो?

रिपोर्टर : यही सवाल मैं आपसे भी पूछ सकता हूं।

छोटा बॉस : हम अपनी ड्यूटी करने आए हैं, हम इस क़त्ल केस की जांच कर रहे हैं।

रिपोर्टर : अगर मैं कहूं कि मैं भी अपनी ड्यूटी करने आया हूं और आपकी जांच की जांच कर रहा हूं ताकि दुनिया को असलियत बता सकूं।

छोटा बॉस : तुम्हें मालूम है तुम बड़ा खतरनाक खेल खेल रहे हो।

रिपोर्टर : क्या मतलब?

छोटा बॉस : यह खेल तुम्हारी जान ले सकता है *(असिस्टेंट से)* इसे समझा कि हम इसके साथ क्या-क्या कर सकते हैं।

असिस्टेंट : बरखुरदार, हम तुम्हें काबू में करके ऐसी जगह फेंक सकते हैं जहां से किसी को तेरी खबर तक न लगे। तुम्हारे अखबार वाले ढूंढते फिरेंगे कि हमारा रिपोर्टर कहां गया? और फिर साथ ही यह खबर भी छप जाए कि उसकी एक औरत से आशनाई थी। वो रंगे हाथों पकड़ा गया।

छोटा बॉस : बदनामी के डर से उसने अपनी खोपड़ी में गोली मार ली। पोस्टमार्टम के बाद लाश परिजनों के हवाले कर दी गई और बस *(चुटकी बजाता है)* और जो कल होगा उसका हमारी फाइल में नाम होगा 'ऑप्रेशन व्हाइट मून' माने ऑप्रेशन सफेद चांद।

रिपोर्टर : ये तुम क्या कह रहे हो? यह लोकतांत्रिक देश है। यहां कानून नाम की भी कोई चीज़ है? यहां कोई इंसाफ भी है?

छोटा बॉस : है, सबकुछ है, पर मैं जो कुछ तुम्हें कह रहा हूं वो भी है। इसलिए यहां से तशरीफ ले जाओ और हमारे काम में दखलअंदाजी मत करो।

रिपोर्टर : पर तुम एक लाचार औरत को इस तरह तंग नहीं कर सकते।

छोटा बॉस : हम लाचार औरत को तंग नहीं कर रहे, बल्कि कोई सच्चाई ढूंढ रहे हैं। एक क़त्ल हो गया है और उसकी तफ़्तीश करना हमारा फर्ज़ है।

रिपोर्टर : और सच को लोगों तक ले जाना हमारा भी फर्ज़ है।

छोटा बॉस : तो फिर करो अपना फर्ज़ पूरा, हमें तो कोई एतराज़ नहीं, पर

इसका अंजाम क्या हो सकता है, उसके बारे में हमने तुम्हें बता दिया है।

रिपोर्टर : तुम मुझे धमकी दे रहे हो?

असिस्टेंट : धमकी नहीं, असलियत कह रहे हैं।

छोटा बॉस : धमकी वो होती है जो सिर्फ डराने के लिए दी जाती है।

असिस्टेंट : असलियत वो होती है जो असली शब्दों में करके दिखाई जाती है।

छोटा बॉस : उम्मीद है आप धमकी और असलियत का फर्क समझ गए होंगे?

रिपोर्टर : हां, समझ गया हूं।

छोटा बॉस : काफी समझदार लगते हो, अब तुम यहां से जाओ ताकि हम अपनी कार्रवाई कर सकें। *(असिस्टेंट से)* इन्हें दरवाज़े तक छोड़ आओ।

रिपोर्टर : शुक्रिया, मैं खुद जा सकता हूं।

(रिपोर्टर जाता है। इस दरम्यान औरत अपनी जगह से हिलती नहीं, बस सहमी हुई बैठी रहती है।)

छोटा बॉस : *(कुर्सी के नज़दीक आकर)* और श्रीमती जी, हम भी अब जा रहे हैं और मेरी बात सुन लो, अगर तुम वायदामाफ गवाह बन जाओगी तो तुम्हारा और हमारा काम आसान हो जाएगा।

औरत : किस किस्म की गवाह?

छोटा बॉस : यही कि तुम्हारी राजा ए. सिंह से आशनाई या जो भी शब्द तुम ठीक समझो, इस्तेमाल कर सकती हो, हमें तो सिर्फ मतलब से मतलब है, और तेरे पति को इसका पता चल गया था, राजा ए. सिंह ने रास्ते का कांटा हटाने के लिए तेरे पति का क़त्ल करवा दिया।

औरत : पर यह झूठ है।

छोटा बॉस : फिर सच क्या है?

औरत : इसका मुझे नहीं पता।

छोटा बॉस : इसका मतलब है कि तुम्हें कुछ पता है, जो हमें नहीं पता और हम यही चाहते हैं कि जो तुम्हें पता है, हमें बता दो।

औरत : मैंने कह दिया ना, मुझे कुछ नहीं पता।

छोटा बॉस : अब तुम अपना बयान बदल रही हो, बयान बदलने का हमारी ज़बान में मतलब है कि तुम अपने गुनाह का इतराफ कर रही हो,

बस कुछ देर के लिए इतना ही काफी है। रात हो गई है, रात सोचने के लिए और कोई फैसला लेने के लिए काफी मुफीद होती है।

(भारी कदमों में बाहर चले जाते हैं और फेडआऊट होता है। औरत टहल रही है। उसकी चाल से उसकी परेशानी झलकती है। फिर टेलीफोन की घंटी बजती है। वह झिझकते-झिझकते टेलीफोन उठाती है।)

औरत : हैलो- क्या बॉम्बे से ट्रंक कॉल है। ...हां मम्मी, मैं कुसुम बोल रही हूं। मम्मी, मैं रात भर सो नहीं सकी। ...अब तो बेबी की परवरिश आपने ही करनी है। वे मुझे किसी वक़्त भी जेल में डाल सकते हैं। क्या कहा, देश की सबसे बड़ी महिला वकील मिसिज़ मलकानी मेरा केस लेने को राजी हो गई है... पर मम्मी, इतने सारे पैसे का इंतजाम कैसे होगा? ...वो मुफ्त में क्यों लड़ेगी? ...क्या कहा? महिला संगठन ने यह केस अपने हाथ में ले लिया है... this is an encouraging news... यह मुझे ताकत देगा कि उन बूंचड़ों का मुकाबला कर सकूं ...मम्मी, सच में officers नहीं, They are really butchers...

(वह फोन कर रही होती है तो छोटा बॉस और असिस्टेंट उसके सिर पर आकर खड़े हो जाते हैं। वह सहमकर फोन रख देती है।)

छोटा बॉस : मैडम, तुम हमें बूचड़ बनने पर मजबूर मत करो।

औरत : तुम यहां? तुम किस तरह आए? घर के सब दरवाज़े तो बंद हैं।

छोटा बॉस : ज़रूरी नहीं कि घर में दरवाज़ों से ही दाखिल हुआ जाए।

असिस्टेंट : खिड़कियों से भी आया जा सकता है।

छोटा बॉस : और रात को हम तफ्तीश के वक़्त एक खिड़की की कुंडी इस तरह एडजस्ट कर गए थे कि खुली हुई भी लगी हुई दिखे, पर ये बातें तुम्हें हैरान नहीं करेंगी क्योंकि तुम खुद इस तरह की बातों से परिचित हो कि ख़ाविंद एक कमरे में सोया हो तो दूसरे कमरे में किसी को किस तरह अंदर लाना है।

औरत : यह क्या बकवास है? यह मेरी बर्दाश्त से बाहर है।

छोटा बॉस : यह बकवास नहीं है, यह सच है और वैसे हम ऐसी कोई बात नहीं करना चाहते जो तुम्हारी बर्दाश्त से बाहर हो, हमें तो सिर्फ

एक confessional statement चाहिए।

औरत : मैं कोई statement नहीं दूंगी।

छोटा बॉस : *(एक डायरी निकालते हुए)* फिर तो हमें इस डायरी से ही काम चलाना पड़ेगा। ज़रा पहचानना, ये डायरी तेरी ही है ?

औरत : हां, मेरी है, पर तुम्हें कहां से मिली है ?

छोटा बॉस : कहां से मिलनी है ? तेरे घर से ही मिली है और इसमें साफ लिखा है।

औरत : क्या साफ लिखा है ?

छोटा बॉस : *(असिस्टेंट से)* ज़रा पढ़कर सुना इसे।

औरत : आप खुद क्यों नहीं पढ़ते ?

छोटा बॉस : चलो मैं ही पढ़ देता हूं, बेशक पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, इसके सफा पांच पर लिखा है कि तेरे पति को तेरे चाल-चलन पर शक हो गया है, और यह बात तेरे लिए तकलीफदेह है।

औरत : यह तो बहुत पुरानी घटना है। मैंने उसे सबकुछ explain कर दिया था और हमारे बीच में कोई ग़लतफहमी नहीं रही थी। यह भी तो डायरी में लिखा है।

छोटा बॉस : डायरी के वो पेज़ हमारे काम के नहीं हैं, हम केवल वही पेज़ पढ़ते हैं जो हमारे काम के हों और हम कोर्ट में वही पेश करते हैं।

औरत : और बाकी पेज़ ?

छोटा बॉस : हमारी मर्ज़ी हुई तो उन्हें फाड़ देंगे।

औरत : पर मैं तो कहूंगी वे पेज़ पढ़े जाएं। डायरी के पेज़ों पर बराबर नंबर लगे हैं।

छोटा बॉस : और हम कह देंगे कि वो पेज तूने जान-बूझकर फाड़ दिए हैं क्योंकि उनमें तेरे राजा ए. सिंह के साथ नाज़ायज ताल्लुकात के स्पष्ट सुबूत थे।

औरत : तुम बहुत बदमाश हो। तुम आखिर मेरे से चाहते क्या हो ?

छोटा बॉस : हम क्या चाहते हैं, यह हमने पहले दिन ही बता दिया था, तू वायदामाफ गवाह बन जा और इतनी स्टेटमेंट रिकॉर्ड करवा दे कि तेरे राजा ए. सिंह के साथ संबंध थे और तेरे पति को उसकी जानकारी हो गई थी। और यक़ीन कर कि यह स्टेटमेंट देने के कारण तेरे पर कोई कानूनी ज़रब नहीं आएगी।

औरत : आप यह क्यों भूल रहे हो कि मैं एक बच्ची की मां हूं। मेरी इस

स्टेटमैंट से मेरी बिना बाप की बच्ची पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

छोटा बॉस : इस बच्ची का हमें पूरा ख़्याल है, यही तो हमारे पास बाजी जीतने का ट्रंप कार्ड है, यानी रंग का पत्ता है और तुझे मालूम होना चाहिए कि रंग की दुक्की भी दूसरे रंग के इक्के पर भारी पड़ती है।

असिस्टेंट : बस हमें एक confessional statement यानी इकबालिया बयान चाहिए। सोच ले... बेचारी बच्ची।

छोटा बॉस : वो जब स्कूल जाएगी तो एक कहानी उससे चिपकी रहेगी कि वो एक ऐसी लड़की है जिसके बाप का क़त्ल हो गया था और यह क़त्ल इसलिए हुआ कि उसकी मां के किसी दूसरे आदमी से नाजायज़ संबंध थे।

असिस्टेंट : और बच्ची जब कॉलेज जाएगी तो लोग नैन नक़्श से पहचानने की कोशिश करेंगे कि इसका बाप कौन है ?

छोटा बॉस : हो सकता है ताने भी मारें।

असिस्टेंट : बेचारी पर क्या गुजरेगी।

छोटा बॉस : उसकी मां को इस बारे में कुछ तो सोचना चाहिए।

असिस्टेंट : मांएं तो अपनी बच्चियों के लिए क्या-क्या नहीं करतीं और एक ये मां है जो कुछ सोचती ही नहीं - *(औरत को हिप्नोटाइज़ करने के लिए दोनों बारी-बारी से ये लाइनें दोहराते रहते हैं कि 'एक ये मां है जो कुछ सोचती ही नहीं-और यह आवाज़ ईको होकर धीरे-धीरे ऊंची होती है।)*

औरत : *(कानों पर हाथ रखकर)* बंद करो ये सबकुछ, तुमने जो भी मेरा बयान लेना है, वो ले लो।

छोटा बॉस : बयान नहीं, इकबालिया बयान।

असिस्टेंट : confessional statement

छोटा बॉस : और ये रहा कागज़।

असिस्टेंट : और ये रहा पैन, जिससे तू अपनी डायरी लिखा करती थी।
(औरत कागज़ और पैन पकड़ती है और कुछ लिखने लगती है। फोन की घंटी बजती है। छोटा बॉस फोन उठाता है।)

छोटा बॉस : हां बॉस, मैं बोल रहा हूं। congratulations, वो लिख रही है।

बड़ा बॉस : क्या लिख रही है ?

छोटा बॉस : वही जनाब, जो आपने हमें लिखवाने के लिए कहा था।

बड़ा बॉस : good

(औरत लिखना बंद कर देती है और फिर कागज़ के टुकड़े-टुकड़े कर देती है। फिर ज़ोर-ज़ोर से पागलों की तरह हंसने लगती है।)

बड़ा बॉस : हैलो... क्या हो रहा है ? तू चुप क्यों हो गया ?

छोटा बॉस : बॉस... उसने लिखना बंद कर दिया है, वो कागज़ के टुकड़े-टुकड़े कर रही है- बॉस वह पागलों की तरह हंस रही है- बॉस वह पागल हो गई है।

बड़ा बॉस : पागल हो गई है- वो तो उसने होना ही था। फिक्र की कोई बात नहीं। उसे पागल ही होना चाहिए था। उसका पागल होना हमारी फेवर में जाएगा।

छोटा बॉस : मैं समझा नहीं।

बड़ा बॉस : पागल की कोई स्टेटमेंट अदालत में मायने नहीं रखती। बड़े-बड़े वकील भी इस डायरी की evidence को झुठला नहीं सकेंगे। यह पागल हो गई है, हम बाजी जीत गए हैं। Operation white moon has been won - congratulations मिस्टर शुक्ला।

छोटा बॉस : Thank you Boss.

(फोन नीचे रखता है। औरत पागलों की तरह हंसे जा रही है, फेडआऊट होता है।)